ज्वालामुखी योग - 21

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अभी अपने आपको देखो कि हम दिव्य दर्शनीय मूर्त दर्शन योग्य, सर्वश्रृंगार सम्पन्न बने हैं? बाप समान पाप कटेश्वर स्वरूप में स्थित हैं? **पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते, जब याद के ज्वाला स्वरूप बनेंगे-ऐसे बने हैं?**

➳ _ ➳ **दर्शन के लिए पर्दा खोलते हैं, पर्दा हटता और दर्शन होता है। ऐसे सम्पन्न दर्शनीय स्वरूप बने हो जो समय का पर्दा हट जाए और आप दिव्य दर्शनीय मूर्त प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष हो** जाओ। वा दर्शनीय मूर्त अभी तक सम्पन्न सहज रहे हो ? **दर्शन सदा सम्पन्न स्वरूप का होता है।** तो ऐसे तैयार हो वा होना है! वा यही सोचते हो कि समय आयेगा तब तैयार होंगे! जो समय पर तैयार होंगे तो वह अपनी ही तैयारी में होंगे वा दर्शनीय मूर्त बनेंगे?

➳ _ ➳ **वह स्व प्रति रहेंगे, न कि विश्व प्रति। वह स्व-कल्याणकारी होंगे और वह विश्वकल्याणकारी। अन्त का टाइटल विश्व-कल्याणकारी है न कि सिर्फ स्व-कल्याणकारी। स्वकल्याणकारी सी विश्व-कल्याणकारी, डबल कार्य करनेवाले ही डबल ताजधारी बनेंगे।**

➳ _ ➳ **सिर्फ स्व-कल्याणकारी डबल ताजधारी नहीं बन सकते। राज्य में आ सकते हैं लेकिन राज्य अधिकारी नहीं बन सकते हैं। तो समय प्रमाण अभी पुरूषार्थ की गति तीव्र है! अभी याद की शक्ति और तीव्रगति से बढ़ाओ।** अभी साधारण स्वरूप में है। इसलिए कभी भी परिस्थितियों के वश धोखा मिल जायेगा। शक्तिशाली याद की भट्ठी में रहेंगे तो सेफ रहेंगे।

➳ _ ➳ सेवा के झंझट से भी परे हो जाओ। **जब सेवा में क्या-क्यों, तू-मैं, तेरा-मेरा आ जाता है तो सेवा भी झंझट हो जाती है। तो इस झंझट से भी परे हो जाओ। सेवा के पीछे स्वमान न भूलो। जिस सेवा में शक्तिशाली याद नहीं तो उस सेवा में सफलता कम और स्वयं को, और और को भी परेशानी ज्यादा।**

➳ _ ➳ **नाम की सेवा नहीं-लेकिन काम की सेवा करो। इसको कहा जाता है - शक्ति सम्पन्न सेवा।** तो ऐसे नाजुक समय आने हैं, जिसमें याद की शक्ति ही सेफ्टी का साधन हैना। ऐसे याद की शक्ति आपके चारों ओर सर्व शस्त्रधारी सेफ्टी के साधन है। **इसलिए सदा स्वयं को, सेवा स्थान को वा प्रवृत्ति के स्थान को और आने वाले सर्व सेन्टर्स के विद्यार्थियों को याद की शक्ति-स्वरूप वृत्ति और वायुमण्डल में लाओ। (21.11.1984)**

➢ **दिव्य दर्शनीय मूर्त**

➳_ ➳ दिव्य दर्शनीय मूर्त आत्माओ की **निशानी** क्या है ?

→ सुंदर

→ आकर्षक

→ दिव्यता

→ हर्षितमुख

→ आभूषण

→ वस्त्र

→ शक्तिसम्पन

→ भक्तवत्सल

→ असुर संहारिणी

→ वरदानीमूर्त

→ साक्षात्कारमूर्त

→ मुकुट

→ भुजा

→ अस्त्र शस्त्र

→ वाहन

→ प्रभामंडल

- यह मूर्ति में 16 बाते होती है
  - वही सब हमे भी स्वयं में धारण करनी है
  - **मैं दिव्य दर्शनीय मूर्त आत्मा हु**
  - **इस स्वमान के नशे में रहना है**

➢ सेवा

➳_ ➳ सेवा के पीछे स्वमान को न भूलो

→ जिस सेवा में शक्तिशाली याद नहीं है

- उस सेवा में सफलता कम और स्वयं को और ऑरों को भी परेशानी ज्यादा
  - नाम की सेवा नहीं करनी है
    - लेकिन काम की सेवा करो
    - इसको कहा जाता है शक्ति सम्प्पन सेवा

➢ शक्तिशाली याद

➳_ ➳ शक्तिशाली याद की भठ्ठी करना है

→ **याद का आधार क्या है** ?

- परिचय
- प्यार
- संबंध
- प्राप्ति

- ▶ अगर यह 4 चीजे है तो उसकी याद सहज रह सकेगी

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये बाबा का **सम्पूर्ण परिचय** चाहिये

→ क्या हमने उसको सम्पूर्ण रीती से जान लिया है ?

→ उसको जान लिया तभी कहा जाता है

- ■ जब हमने उसने आजतक जो कुछ भी कहा है
  - ▶ वह हमने समझा है
  - ▶ जितनी मुरली चली है वह सब हमने पढ़ ली क्या ?
  - ▶ जब पढ़ ली हो, एक एक वाक्य को समझ लिया होगा
  - ▶ तब कहा जायेगा की बाबा का हमे परिचय है

→ तो पहला आधार है, सम्पूर्ण परिचय

- ■ और उसके लिये चाहिये
  - ▶ **"गहन अध्यन"**

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये बाबा से **सम्पूर्ण प्यार** चाहिये

→ प्यार अर्थात **उसे जो अरछा लगे वो मुझे करना चाहिये**

→ प्यार अर्थात **सम्पूर्ण समानता**

- ■ जिसका जिससे प्यार है,
  - ▶ वह धीरे धीरे उसके समान बन जाता है
  - ▶ जो जो उसमे है, वह वह हममे आने लगता है
  - ▶ तभी कहेंगे की हमको उससे प्यार है

→ सम्पूर्ण प्रेम अर्थात **सम्पूर्ण समर्पण**

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये बाबा से **सर्व संबंध** चाहिये

→ **सर्व संबंध उस एक से जोड़ने का अभ्यास चाहिये**

- ■ ज्ञान का सर्व श्रेष्ठ महावाक्य ही यह है की,
  - ▶ "देह सहित देह के सर्व संबंधो को भूल अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो"

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये एक बाबा से ही **सम्पूर्ण प्राप्ति** चाहिये

→ स्थूल प्राप्ति और सूक्ष्म दोनों प्राप्ति उसी से करनी है

- ■ अगर वो दे तो ठीक,
  - ▶ न दे तो और ही अरछा

→ सूक्ष्म प्राप्तिया अगर है,स्थूल प्राप्ति तो उसके पीछे पीछे आ जायेगी

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये **सम्पूर्ण ज्ञान** चाहिये

→ ज्ञान बुध्धि में टपकता रहना चाहिये

- ■ सम्पूर्ण ज्ञान की स्मृति चाहिये
  - ▶ योग का आधार ज्ञान है
  - ▶ ज्ञान का आधार योग है

▶ दोनों एक दुसरे के पूरक है

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये **सम्पूर्ण प्यूरिटी** चाहिये

→ **इस ज्ञान मार्ग में योग की साधना**

■ **पवित्र बुध्धि वाले ही कर सकते है**

▶ जिनकी बुध्धि में अपवित्रता, धुना है, इर्ष्या है लगाव है, विकारो का अंश है वह योग की साधना क्र ही नहीं सकता है

→ जो कर्म **श्रीमत के आधार** पर किये जाते है

→ जो कर्म **याद में** किये जाते है

→ जो कर्म **आत्म अभिमानी स्थिति में** किये जाते है

→ जो कर्म **डिटेच होकर** किये जाते है

→ जो कर्म **निरहंकारी** होकर किये जाते है

→ जो कर्म **निमित** समझकर किये जाते है

→ जो कर्म **निस्वार्थ भाव** से किये जाते है

→ जो कर्म **आसक्ति भाव से परे रह** किये जाते है

■ **यह सभी कर्मो को सुकर्म कहते है**

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये सम्पूर्ण **वैराग्य** चाहिये

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये सम्पूर्ण **मौन** चाहिये

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये सम्पूर्ण **एकाग्रता** चाहिये

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये सम्पूर्ण **एकांत** चाहिये

→ जहा यह सब होगा तभी हम याद कर सकेंगे

■ याद अर्थात **कितना समय हम परमधाम में रहते है**

■ याद अर्थात **आत्म अभिमानी स्थिति में लंबे समय तक रहना**

■ याद अर्थात **शरीर से डिटेच होने का अभ्यास**

▶ **शरीर में आना और बहार निकलना यह अभ्यास बहुत ही ज्यादा पावरफुल है इसकी प्रैक्टिस को बढ़ाना है**

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये सम्पूर्ण **ईश्वरीय प्रेम** चाहिये

→ **जब सम्पूर्ण प्रेम की अवस्था होगी**

■ **तब याद शक्तिशाली होगी**

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये सम्पूर्ण **त्याग** चाहिये

→ हमे किन किन चीजो का त्याग करना है ?

■ साधारण कर्म

■ विकर्म

■ देह भान

■ कर्मेन्द्रियो की आकर्षण का

■ देह सहित देह के संबंध का

- व्यर्थ
- लगाव

➳_ ➳ शक्तिशाली याद के लिये सम्पूर्ण **अंतरर्मुखता** चाहिये